Gayatri Aarti Lyrics in Hindi

The enclosed Gayatri Mata Aarti has been excerpted

from the book:

Gayatri Havan Vidhi

by Pandit Shirram Sharma Acharya

Published by

The All World Gayatri Pariwar (awgp.org)

Preliminary Sanskrit Invocation

॥ नीराजनम् - आरती ॥

थाली में पुष्पादि से सजाकर आरती जलाएँ, तीन बार जल घुमाकर यज्ञ भगवान् व देव प्रतिमाओं की आरती उतारें। आरती उतारने का तात्पर्य है कि यज्ञ भगवान् का सम्मान, परमार्थ परायणता का ज्ञान प्रकाश दसों दिशाओं में फैले, सर्वत्र उसी का शंख बजे, घण्टा-निनाद सुनाई पड़े और हर धर्मप्रेमी इस प्रयोजन के लिए उठ खड़ा हो। सभी लोग खड़े हों। देवशक्तियों की आरती करें।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति, परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥

ॐ यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः,
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः, गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः॥

Gayatri Aarti in Hindi

॥ गायत्री-आरती ॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता॥ जयति० ॥
आदि शक्ति तुम अलख-निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख-शोक-भय-क्लेश-कलह-दारिद्र्य दैन्यहर्त्री॥ जयति० ॥
ब्रह्मरूपिणी प्रणत पालिनी, जगत् धातृ अम्बे।
भवभयहारी जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥ जयति० ॥
भय-हारिणी भव-तारिणि अनघे, अज आनन्द राशी।
अविकारी अघहरी अविचलित, अमले अविनाशी॥ जयति० ॥
कामधेनु सत्-चित् आनन्दा, जय गङ्गा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम, सावित्री सीता॥ जयति० ॥
ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना, शोभा गुण-गरिमे॥ जयति० ॥
स्वाहा स्वधा शची ब्रह्माणी, राधा रुद्राणी।
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी॥ जयति० ॥
जननी हम हैं, दीन-हीन, दुःख दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे॥ जयति० ॥
स्नेह सनी करुणामयि माता! चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै॥ जयति० ॥
काम-क्रोध मद-लोभ-दम्भ-दुर्भाव-द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये॥ जयति० ॥
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि-पुष्टि त्राता।
सत मारग पर हमें चलाओ, जो है सुख दाता॥ जयति० ॥
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता॥